“कुँडुख़ साहित्य का समालोचात्मक अध्ययन”

1. भूमिका:

कोई भाषा साहित्य एकाएक उत्पन्न नहीं हो जाती है। इसकी उत्पति तथा विकास में चिरकाल की प्रवाहित भाषा व्यापकताएँ, विचार धाराएँ सिमटी हुई रहती है। जब हम किसी विषय को सोचते हैं तो एक प्रकार की मानसिक संभाषण करते हैं जो हमारे विचार आगे चलकर भाषा के रूप में प्रकट होती है। साथ ही यही जनभाषा व्याकरण के नियमों से आबाद्ध होकर साहित्यिक भाषा का स्थान ले लेती है। परन्तु यह साहित्य किसी व्यक्ति विशेष की नहीं, बल्कि सामान्य जनता के चित प्रति बिंब है। फिर यही साहित्यिक भाषा क्लिष्ट होकर, पुनः सरलता की और अग्रसर होने लगती है। यह चक्र शाश्वत गति से चलते रहता है क्योंकि भाषा के निरंतरता से निरंतर प्रवाह से सरलीकरण की अवृत्ति हमेशा बनी रहती है। प्रत्येक भाषा साहित्य संबंधित जनता की चितवृत्ति का संचित प्रतिविंब होता है तब यह निश्चित हो जाता है कि जनता की चितवृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप मंे भी परिवर्तन होता चला जाता है। यही साहित्य संबंधित चिन्तन समालोचनात्मक स्वरूप को उजागर करने में मजबूर कर देती है।

कुँडुख़ बोलने वालों की संख्या झाखण्ड में प्राचीन काल से ही रहा है। कुँडुख़ भाषा साहित्य भी काफी समृद्ध है, परन्तु अधिकाधिक मौखिक है। वर्त्तमान परिपेक्ष के संबंधित साहित्य में शोध कार्य की रफतार तेजी से बढ़ी है। परन्तु समालोचनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो यह बिल्कुल ही नयी पौध की तरह लगती है। उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि कुँडुख़ भाषा साहित्य में समालोचनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह अनुसंधान कार्य हो सकते हैं।

2. संबंधित शोध साहित्य की समीक्षा:

मुख्य रूप से देखा जाय तो कुँड़ुख़ भाषा साहित्य में समालोचनात्मक अध्ययन नही के बराबर है। परन्तु यह नहीं कि समालोचनात्मक कार्य नहीं हुए हैं। कुछ मौखिक लिखित समालोचनाएँ भी मिलती है। प्रख्यात मानव शास्त्री स्व0 डॉ0 करमा उराँव अपने किताबों में सर्वप्रथम धुमकुड़िया लड़के-लड़कियों के रात बिताने जैसे नकारात्मकता को काटते हुए इसे विद्या केन्द्र के रूप में मानक अवस्था का स्पष्ट किये। साथ ही मुक्का सेंदरा में रोहतास गढ़ की मुस्लिमों के हाथों हारने में उराँव जनजाति हंड़िया या नशा करके सोये रहने की बात को नकारते हुए प्रो. महाबीर उराँव अपने किताब "कुँड़ुख़ कत्थ्अइन" में लिखा हैं। इन बातों कों मौखिक रूप में विधायक चमरा लिन्डा, धर्म अगुवा श्री बन्धन तिग्गा ने भी कई अपने भाषणों में स्पष्ट किया है।

इस प्रकार से कई मौखिक और लिखित आलोचानाएँ हैं। किन्तु बड़े स्तर पर आलोचनात्मक तथा समालोचनात्मक अनुसंधान कार्य नहीं हुए हैं जो कि लिखित पुस्तकों के रूप में उपलब्ध हो। विदित है कि इस तरह शोध कार्‌य वर्त्तमान में अत्यन्त अवश्यक है।

3. शोध अध्ययन की अवश्यकता एवं महत्व:

उपर्युक्त साहित्य समीक्षा में कुछ बातों को स्पष्ट किया गया है यह समालोचनात्मक अनुसंधान कार्य मौखिक है और लिखित भी है परन्तु शोध संचित नहीं है। इसलिए कुँड़ुख़ भाषा साहित्य को व्यापक और विशिष्टता बनाने के लिए इस प्रकार की साहित्यिक समालोचना अनुसंधान संबंधित कार्य भाषा साहित्य में एक अइना होगी है। यह कई पहलुओं को मजबूत और सबल बनाने में व्यापक चिन्तन मनन करने में मजबूर कर सकती है और यह शोध अध्ययन नितांत अवश्यक सिद्ध हो सकती है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि यह कुँडुख़ भाषा साहित्य में समालोचनात्मक अध्ययन वर्त्तमान विकासशील साहित्य के लिए अति अवश्यक कड़ी प्रदान करेगी।

4. उद्देश्य:

कुँडुख़ भाषा साहित्य में समालोचनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भाषा साहित्य में तैरते विभिन्न भ्रतियों को दूर करने में विभिन्न साहित्यिक संगठनों लेखकों, साहित्यकारों के लिए निर्णायिक कड़ी को स्पष्ट करना है। इस अनुसंधान से भाषा, साहित्य, सामाजिक, संास्कृतिक पहलूओं अन्य अवस्थाओं के स्थिति परिस्थितियों, भ्रांतियों, सकारात्मक-नकारात्मक, नये-पुराने सामाजिक रूढ़िवादी, आवधारणाओं से अवगत कराकर नयी दिशा प्रदान करना ही मुख्य उद्देश्य होगा।

5. अध्ययन क्षेत्र:

इस अनुसंधन अध्ययन के लिए झारखण्ड के राँची, गुमला, लोहरदगा, चाईबासा जिलों के कुछ गाँवों को आधर मानकर कुँडुख़ भाषा साहित्य के लिए समालोचनात्मक अध्ययन किया जाएगा।

6. शोध विधि:

यह अनुसंधान कार्य के लिए आधार ग्रन्थ, संदर्भ ग्रंथ तथा पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही संबंधित भाषाविदों, भाषाविशेषज्ञों से विचार-विमर्श, पत्राचार, साक्षात्कार अपेक्षित होगा।

मुख्य रूप से गाँव जा कर ग्रामीणों, भाषा विदों, बुर्जुगों से सम्पर्क करके भाषा साहित्य, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों का संकलन करना शामिल होगा। इस शोध कार्य में भाषा साहित्य के समालोचनात्मक अध्ययन में उपयोगी

उपकरणों तथ्यों की सहारा ली जायगी। मुख्य रूप से साक्षात्कार विधि, आलेख तथा वाचिकता विश्लेषणात्मक, वर्णात्मक विधि, सर्वेक्षण विधि, एतिहासिक विधि का उपयोग किया जाएगा।

7. प्रेरणा:

साहित्यकार (हिन्दी) डॉ. मिथलेस कुमार सर से बाच-चीत के दौरान आलोचना, समालोचना विषय पर मुझे शोध कार्य करने की प्रेरणा मिली। सहित्यकार महादेव टोप्पो, डॉ. नारायण भगत तथा डॉ. उमेशनन्द तिवारी के बीच चर्चा भी मेरी जिज्ञासा को और बढ़ा दिया। मन में कई तरह की आलोचनाएँ, भ्रान्तियां, चिंतन-मनन इन गहराइयों तक जाने हेतु मजबूर कर दिया।

मेरे शोध निदेशक डॉ. हरि उराँव ने भी इस विषय पर शोध कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

8. अध्ययन परिकल्पना:

कुँडुख़ भाषा साहित्य में लम्बे समय से विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन हो रही है। लेकिन भाषा साहित्य में समालोचनात्मक शोध अध्ययन मेरी जानकारी में नहीं हुआ है। इस शोध अध्ययन से निम्नांकित संभावित उत्तर या परिलक्षित हो सकती है-

1. इस शोध से भाषा साहित्य में नयी दिशा मिलेगी।
2. भाषा साहित्य में सकारात्मक असर पड़ेगा।
3. भाषा साहित्य में नकारात्मक असर पड़ेगा।
4. भाषा साहित्य में अनेकों भ्रतियाँ दूर होगी।
5. भाषा साहित्य की विकास में नयी दिशा मिलेगी।

9. समाज में शोध की प्रासंगिकता एवं उपयोगिता:

कुँडुख़ भाषा साहित्यिक समालोचनात्मक शोध से समाज तथा भाषा साहित्य क्षेत्र में अनेकों भ्रांतियाँ दूर होगी। हम इस आलोचनात्मक अध्ययन से देख सकेंगे कि हमारे लिए शोध कितना जरूरी है। क्योंकि इसके माध्यम से समाज में भाषा साहित्य सांस्कृतिक सामाजिक, क्षेत्र में नवाचार हेतु नयी दिशा मिलेगी।

शोध प्रारूप

(शोध की रूप रेखा)

कुँडुख़ साहित्य का समालोचनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

- प्रस्तुत शोध कार्य की औचित्य
- प्रस्तुत शोध कार्य की अध्ययन पद्धति
- पूर्व में किये गये आलोचना संबंधित कार्यों की समीक्षा

प्रथम अध्याय: कुँडुख़ भाषा साहित्य का समालोचनात्मक स्वरूप

- कुँडुख़ भाषा साहित्य का समालोचनात्मक परिचय
- कुँडुख़ भाषा साहित्य में समालोचना का अर्थ, परिभाषा एवं विस्तार
- कुँडुख़ भाषा साहित्य में समालोचना का उद्भव विकास
- कुँडुख़ भाषा साहित्य में समालोचना का स्थान
- कुँडुख़ भाषा साहित्य में समालोचना की विशेषताएँ
- कुँडुख़ भाषा साहित्य में समालोचना का महत्व।

द्वितीय अध्याय : कुँडुख़ व्याकरण में समालोचना का स्वरूप

- कुँडुख़ व्याकरण
- लिपि
- विशेषताएँ
- प्रमुख कुंड़ुख़ व्याकरण पुस्तकों के समालोचनात्मक अध्ययन
- विभिन्न लेखकों के विचार

तृतीय अध्याय: कुँडुख़ पद्य साहित्य का समालोचनात्मक स्वरूप

- पद्य साहित्य का उद्भव विकास
- पद्य साहित्य के प्रकार
- पद्य साहित्य का काल खंड
- पद्य साहित्य की विशेषताएँ
- पद्य साहित्य का महत्व
- पद्य साहित्य में छंद, अलांकार, शब्द शक्ति
- प्रमुख कुंडुख़ गीत और कविता पुस्तकों के समालोचनात्मक अध्ययन
- विभिन्न लेखकों, कवियों, गायकों का समीक्षात्मक विचार

चतुर्थ अध्याय: कुँडुख़ गद्य साहित्य का समालोचनात्मक स्वरूप

- गद्य साहित्य का उद्भव और विकास
- गद्य साहित्य के प्रकार
- गद्य साहित्य का काल खंड
- गद्य साहित्य का विशेषताएँ
- गद्य साहित्य का महत्व
- मौखिक और शिष्ट गद्य साहित्य में समालोचनात्मक समंजस्य
- प्रमुख कुंडुख़ गद्य साहित्यिक पुस्तकों के समालोचनात्मक अध्ययन
- विभिन्न कहानीकार, उपन्यासकार, नाटकाकार, निबंधकार लेखकों के विचार।

पंचम अध्याय: कुँडुख़ प्रकीर्ण साहित्य का समालोचनात्मक स्वरूप

- कहावत

- पहेली
- लोकोक्ति
- प्रमुख कुंड़ुख़ प्रकीर्ण साहित्यिक पुस्तकों के समालोचनात्मक अध्ययन
- अन्य

षष्ट अध्याय: आधुनिक कुँड़ुख़ साहित्य में डिजिटल आयामों के समालोचनात्मक स्वरूप

- पत्र-पत्रिका
- टी.वी./टेलीविजन
- बेबसाइट
- ईमेल
- टेलीग्राम
- वाट्सएप
- फेसबुक
- यूट्यूब
- आकाशवाणी

सप्तम अध्याय: कुँड़ुख़ भाषा साहित्य के कुछ अन्य आयामों/पहलुओं का समालोचनात्मक स्वरूप

- सामाजिक स्वरूप
- सांस्कृतिक स्वरूप
- धार्मिक स्वरूप
- राजनीतिक स्वरूप

- आर्थिक स्वरूप
- अन्य

निष्कर्ष/उपसंहार

1. परिशिष्ट क) आधार ग्रंथों की सूची
   ख) संदर्भ ग्रंथ सूची
   ग) साक्षात्कार की सूची
   घ) चित्रावली
2. पत्र-पत्रिकाओं की सूची

नोट : शोध प्रारूप में आवश्यकतानुसार आंशिक परिवर्तन किये जा सकते हैं

[illegible]

[illegible]

संदर्भ ग्रंथ सूची

क्र.सं.	लेखक	किताब	प्रकाशन	वर्ष
1.	नवल नन्द किशोर	हिन्दी आलोचना का विकास	राजकमल प्रकाशन	1981
2.	उपाध्याय डॉ. कृष्णदेव	लोक साहित्य की भूमिका		2008
3.	रामनारायण लाल	समालोचन-समुच्चय	बुक सेलर, इलाहाबाद,	1930
4.	सिंह डॉ. नामबर	इतिहास और आलोचना	नया सहित्य प्रकाशन इलाहाबाद	1962
5.	शुक्लोत्तर समीक्षा			
6.	गुरू पं. कामता प्रसाद	हिन्दी व्याकरण्	वैभव लक्ष्मी प्रकाशन	
7.	शमा डॉ. शिवमूर्ति	सामान्य हिन्दी	शारदा पुस्तक भवन	2013
8.	तिवारी भोला नाथ	भाषा विज्ञान प्रवेश एवं हिन्दी भाषा	किताबघर प्रकाशन	2009
9.	उराँव डॉ. हरि	हिन्दी भाषा और कुँड़ुख़ भाषा (क्रियाओं का प्रकार्यत्मक अध्ययन)	के.के. पब्लिकेशन	2010
10.	उराँव महाबीर अरा चौठी	कुँड़ुख़ कत्थइन अरा कत्थटूड़		2005
11.	कुजूर डॉ. फ्रांसिस्का	बरचा ओन्टा रंफ	सत्य भारती प्रकाशन	2008
12.	उराँव डॉ. तेतरू	उराँव लोक साहित्य	झारखण्ड झरोखा, राँची	2021
13.	टोप्पो महादेव	आदिवासी विश्व चेतना	अनुज्ञा बुक्स	2022
14.	तिर्की अहलाद	कुँड़ुख़ साहिया		1949
15.	कुजूर दवले	मुन्ता पूंप झुम्पा	नई दिल्ली	1950
16.	भगत भिखराम	आदिवासी पड़हा डहेर	राजी पड़हा टंडी	1969

17.	बेक पी.सी.	कुँड़ुख़ कत्थ बिल्ली	सत्य भारती	
18.	उराँव इंद्रजीत	पुना ख़ोर	अमित प्रकाशन	1986
19.	लकड़ा पीयुस	अयंग जिया	कैथो लिक प्रेस	1986
20.	एक्का जस्टिन	नम्हय एड़पा		1987
21.	कुजूर बसन्ती	दव बिल्ली	अमित प्रकाशन	1988
22.	भगत डॉ. नारायण	सिन्दरी	जनजातीय भाषा अकादमी बिहार सरकार	1995
23.	बेक पी.सी.	कुँड़ुख़ दर्शन		1998
24.	उराँव प्रो. इन्द्रजीत	कुँड़ुख़ बुझुरनखरना	साक्षी प्रिंटस	2007
25.	कुजूर विजय आशिष	कुँड़ुख़ भाषा साहित्य एक अध्ययन	साक्षी प्रिंटस	2007
26.	कुजूर इग्नेस	इलेलन्ता	सी.एफ. कुजूर पुरूलिया रोड़, राँची	
27.	त्रिगुणायत जगदीश	उराँव भाषा और साहित्य		1958
28.	आर्चर डब्लू.जी. एवं लकड़ा धरमदास	लील खोर'आ ख़ेख़ेल		1941
29.	एक्का डॉ. फ्रांसिस	कुँड़ुख़ फोनेटिक्स रीडर		1983
30.	उराँव महाबीर	ख़ीरी झरिया	कैथोलिक प्रेस	2017